रविवार 4 अक्टूबर, 2020

*विषय — **कल्पना***

स्वर्ण पाठ: 1 कुरिन्थियों 3 : 19

"*संसार का ज्ञान परमेश्वर के निकट मूर्खता है, जैसा लिखा है; कि वह ज्ञानियों को उन की चतुराई में फंसा देता है।*"

उत्तरदायी अध्ययन: **रोमियो 16 : 17-19**
इफिसियों 4: 14, 15
रोमियो16: 20

17 अब हे भाइयो, मैं तुम से बिनती करता हूं, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुम ने पाई है, फूट
पड़ने, और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो; और उन से दूर रहो।
18 क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते है; और चिकनी चुपड़ी
बातों से सीधे सादे मन के लोगों को बहका देते हैं।
19 तुम्हारे आज्ञा मानने की चर्चा सब लोगों में फैल गई है; इसलिये मैं तुम्हारे विषय में आनन्द करता हूं;
परन्तु मैं यह चाहता हूं, कि तुम भलाई के लिये बुद्धिमान, परन्तु बुराई के लिये भोले बने रहो।
14 ताकि हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से उन के भ्रम की युक्तियों
की, और उपदेश की, हर एक बयार से उछाले, और इधर-उधर घुमाए जाते हों।
15 वरन प्रेम में सच्चाई से चलते हुए, सब बातों में उस में जो सिर है, अर्थात मसीह में बढ़ते जाएं।
20 शान्ति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पांवों से शीघ्र कुचलवा देगा॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. **याकूब 1 : 16, 17, 21**

16 हे मेरे प्रिय भाइयों, धोखा न खाओ।

17 क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिस में न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, ओर न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है।

21 इसलिये सारी मलिनता और बैर भाव की बढ़ती को दूर करके, उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो, जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है।

2. 1 राजा 18 : 17-19, 21-26 (*से 2nd* .), 30, 33-36, 38, 39

17 एलिय्याह को देखते ही अहाब ने कहा, हे इस्राएल के सताने वाले क्या तू ही है?

18 उसने कहा, मैं ने इस्राएल को कष्ट नहीं दिया, परन्तु तू ही ने और तेरे पिता के घराने ने दिया है; क्योंकि तुम यहोवा की आज्ञाओं को टाल कर बाल देवताओं की उपासना करने लगे।

19 अब दूत भेज कर सारे इस्राएल को और बाल के साढ़े चार सौ नबियों और अशेरा के चार सौ नबियों को जो ईज़ेबेल की मेज पर खाते हैं, मेरे पास कर्म्मेल पर्वत पर इकट्ठा कर ले।

21 और एलिय्याह सब लोगों के पास आकर कहने लगा, तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे, यदि यहोवा परमेश्वर हो, तो उसके पीछे हो लो; और यदि बाल हो, तो उसके पीछे हो लो। लोगों ने उसके उत्तर में एक भी बात न कही।

22 तब एलिय्याह ने लोगों से कहा, यहोवा के नबियों में से केवल मैं ही रह गया हूँ; और बाल के नबी साढ़े चार सौ मनुष्य हैं।

23 इसलिये दो बछड़े लाकर हमें दिए जाएं, और वे एक अपने लिये चुनकर उसे टुकड़े टुकड़े काट कर लकड़ी पर रख दें, और कुछ आग न लगाएं; और मैं दूसरे बछड़े को तैयार करके लकड़ी पर रखूंगा, और कुछ आग न लगाऊंगा।

24 तब तुम तो अपने दवता से प्रार्थना करना, और मैं यहोवा से प्रार्थना करूंगा, और जो आग गिराकर उत्तर दे वही परमेश्वर ठहरे। तब सब लोग बोल उठे, अच्छी बात।

25 और एलिय्याह ने बाल के नबियों से कहा, पहिले तुम एक बछड़ा चुनकर तैयार कर लो, क्योंकि तुम तो बहुत हो; तब अपने देवता से प्रार्थना करना, परन्तु आग न लगाना।

26 तब उन्होंने उस बछड़े को जो उन्हें दिया गया था ले कर तैयार किया, और भोर से ले कर दोपहर तक वह यह कह कर बाल से प्रार्थना करते रहे, कि हे बाल हमारी सुन, हे बाल हमारी सुन! परन्तु न कोई शब्द और न कोई उत्तर देने वाला हुआ।

30 तब एलिय्याह ने सब लोगों से कहा, मेरे निकट आओ; और सब लोग उसके निकट आए। तब उसने यहोवा की वेदी की जो गिराई गई थी मरम्मत की।

33 तब उसने वेदी पर लकड़ी को सजाया, और बछड़े को टुकड़े टुकड़े काटकर लकड़ी पर धर दिया, और कहा, चार घड़े पानी भर के होमबलि, पशु और लकड़ी पर उण्डेल दो।

34 तब उसने कहा, दूसरी बार वैसा ही करो; तब लोगों ने दूसरी बार वैसा ही किया। फिर उसने कहा, तीसरी
बार करो; तब लोगों ने तीसरी बार भी वैसा ही किया।
35 और जल वेदी के चारों ओर बह गया, और गड़हे को भी उसने जल से भर दिया।
36 फिर भेंट चढ़ाने के समय एलिय्याह नबी समीप जा कर कहने लगा, हे इब्राहीम, इसहाक और इस्राएल के
परमेश्वर यहोवा! आज यह प्रगट कर कि इस्राएल में तू ही परमेश्वर है, और मैं तेरा दास हूँ, और मैं ने ये
सब काम तुझ से वचन पाकर किए हैं।
38 तब यहोवा की आग आकाश से प्रगट हुई और होमबलि को लकड़ी और पत्थरों और धूलि समेत भस्म
कर दिया, और गड़हे में का जल भी सुखा दिया।
39 यह देख सब लोग मुंह के बल गिरकर बोल उठे, यहोवा ही परमेश्वर है, यहोवा ही परमेश्वर है;

3. यिर्मयाह 9 : 6 (कारण)

6 ... छल ही के कारण वे मेरा ज्ञान नहीं चाहते, यहोवा की यही वाणी है।

4. 2 थिस्सलुनीकियों 2 : 3, 4

3 किसी रीति से किसी के धोखे में न आना क्योंकि वह दिन न आएगा, जब तक धर्म का त्याग न हो ले,
और वह पाप का पुरूष अर्थात विनाश का पुत्र प्रगट न हो।
4 जो विरोध करता है, और हर एक से जो परमेश्वर, या पूज्य कहलाता है, अपने आप को बड़ा ठहराता है,
यहां तक कि वह परमेश्वर के मन्दिर में बैठकर अपने आप को परमेश्वर प्रगट करता है।

5. मत्ती 24 : 1 (यीशु), 4 (यीशु)-7, 10-14

1 जब यीशु मन्दिर से निकलकर जा रहा था, तो उसके चेले उस को मन्दिर की रचना दिखाने के लिये उस
के पास आए।
4 यीशु ने उन को उत्तर दिया, सावधान रहो! कोई तुम्हें न भरमाने पाए।
5 क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे, कि मैं मसीह हूं: और बहुतों को भरमाएंगे।
6 तुम लड़ाइयों और लड़ाइयों की चर्चा सुनोगे; देखो घबरा न जाना क्योंकि इन का होना अवश्य है, परन्तु
उस समय अन्त न होगा।
7 क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा, और जगह जगह अकाल पड़ेंगे, और
भुईंडोल होंगे।
10 तब बहुतेरे ठोकर खाएंगे, और एक दूसरे से बैर रखेंगे।
11 और बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बहुतों को भरमाएंगे।

12 और अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा हो जाएगा।
13 परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।
14 और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 472: 24 (सब)-26

ईश्वर और उसकी रचना में सभी वास्तविकता सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत है। वह जो बनाता है वह अच्छा है, और जो कुछ भी बनाया जाता है वह उसी के द्वारा बनाया जाता है।

2. 275 : 10-24

वास्तविकता और उसके विज्ञान में होने के क्रम को समझने के लिए, आपको परमेश्वर को उस सभी के दिव्य सिद्धांत के रूप में फिर से शुरू करना चाहिए जो वास्तव में है। आत्मा, जीवन, सत्य, प्रेम, एक के रूप में गठबंधन, - और भगवान के लिए शास्त्र के नाम हैं। सभी पदार्थ, बुद्धि, ज्ञान, अस्तित्व, अमरता, कारण और प्रभाव ईश्वर के हैं। ये उनकी विशेषताएं हैं, अनंत दिव्य सिद्धांत, प्रेम की शाश्वत अभिव्यक्तियाँ। कोई भी ज्ञान बुद्धिमान नहीं है, लेकिन उसका ज्ञान है; कोई सत्य सत्य नहीं है, कोई प्रेम प्यारा नहीं है, कोई जीवन जीवन नहीं है, लेकिन परमात्मा है; कोई अच्छा नहीं है, लेकिन अच्छा भगवान सबसे अच्छा है।

दिव्य तत्वमीमांसा, जैसा कि आध्यात्मिक समझ से पता चलता है, स्पष्ट रूप से दिखाता है कि सभी मन है, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी, सर्वज्ञ, - अर्थात्, सभी शक्ति, सभी उपस्थिति, सभी विज्ञान। इसलिए सभी वास्तव में मन की अभिव्यक्ति है।

3. 273 : 1-9, 29-9

पाप, बीमारी और मृत्यु की सामग्री और इसके दावे ईश्वर के विपरीत हैं, और वे उससे नहीं निकल सकते। कोई भौतिक सत्य नहीं है। भौतिक इंद्रियाँ ईश्वर और आध्यात्मिक सत्य का कोई संज्ञान नहीं ले सकती हैं। मानव विश्वास ने कई आविष्कार किए हैं, लेकिन उनमें से एक भी दिव्य विज्ञान के दिव्य सिद्धांत के बिना होने की समस्या को हल नहीं कर सकता है। सामग्री की परिकल्पना से कटौती वैज्ञानिक नहीं है। वे वास्तविक विज्ञान से भिन्न हैं क्योंकि वे ईश्वरीय नियम पर आधारित नहीं हैं।

विज्ञान दिखाता है कि सामग्री, परस्पर विरोधी नश्वर राय और विश्वास हर समय त्रुटि के प्रभावों का उत्सर्जन करते हैं, लेकिन यह नश्वर मन का वातावरण नैतिक और स्वास्थ्य के लिए विनाशकारी नहीं हो सकता है जब यह क्राइस्टच्यून साइंस द्वारा तुरंत और लगातार विरोध किया जाता है। ट्रुथ एंड लव इस मानसिक माया का प्रतिकार करता है, और इस प्रकार अस्तित्व और अस्तित्व को बनाए रखता है। पाँचों इंद्रियों से प्राप्त अनावश्यक ज्ञान केवल लौकिक है, - नश्वर मन का गर्भाधान, भावना का वंश, आत्मा का नहीं, - और जो बुराई और नाश होने का प्रतीक है। प्राकृतिक विज्ञान, जैसा कि आमतौर पर कहा जाता है, वास्तव में प्राकृतिक नहीं है और न ही वैज्ञानिक है, क्योंकि यह भौतिक इंद्रियों के प्रमाण से उत्पन्न होता है।

4. 146 : 2 (यह)-12

प्राचीन ईसाई चिकित्सक थे। ईसाई धर्म का यह तत्व क्यों खो गया है? क्योंकि हमारे धर्म की प्रणालियाँ चिकित्सा की हमारी प्रणालियों द्वारा कम या ज्यादा संचालित होती हैं। पहले मूर्तिपूजा सामग्री में विश्वास था। स्कूलों ने देवता में विश्वास के बजाय, ड्रग्स के फैशन पर विश्वास किया है। अपनी ही कलह को नष्ट करने के लिए मामले पर भरोसा करके, स्वास्थ्य और सद्भाव का त्याग किया गया है। ऐसी प्रणालियाँ आध्यात्मिक शक्ति की जीवन शक्ति के बंजर हैं, जिनके द्वारा भौतिक अर्थों को विज्ञान का सेवक बना दिया जाता है और धर्म क्रिस्टलाइज हो जाता है।

5. 186 : 28-12

नश्वर मन स्वयं से अनभिज्ञ है, या यह कभी भी स्वयं को धोखा नहीं दे सकता है। यदि नश्वर मन बेहतर होना जानता था, तो यह बेहतर हो जाता। चूँकि इसे अपने अलावा किसी चीज़ पर विश्वास करना चाहिए, यह देवता के रूप में महत्वपूर्ण है। मानव मन शुरू से ही मूर्तिमान रहा है, अन्य देवताओं और एक से अधिक मन में विश्वास रखता है।

जैसा कि नश्वर भी नश्वर अस्तित्व को समझ नहीं पाते हैं, वे सभी अज्ञानी मन और उनकी रचनाओं से कितने अनभिज्ञ होंगे।

यहाँ आप देख सकते हैं कि तथाकथित भौतिक बोध कैसे विचार के अपने रूप बनाता है, उन्हें भौतिक नाम देता है, और फिर उनकी पूजा करता है और उनसे डरता है। बुतपरस्त अंधेपन के साथ, यह कुछ सामग्री भगवान या दवा की क्षमता से परे है। मानव मन की मान्यताओं ने उसे लूट लिया और उसे गुलाम बना लिया, और फिर वे इस परिणाम को शैतान नाम के एक अन्य भ्रमपूर्ण व्यक्तिकरण पर लागू करते हैं।

6. 166 : 8-14

मोहम्मडन अपनी आत्मा की मुक्ति के लिए मक्का की तीर्थयात्रा में विश्वास करता है। लोकप्रिय चिकित्सक अपने नुस्खे पर विश्वास करता है, और फार्मासिस्ट अपनी दवाओं की शक्ति में विश्वास करता है ताकि एक आदमी की जान बच सके। मोहम्मडन की मान्यता एक धार्मिक भ्रम है; डॉक्टर और फार्मासिस्ट का विश्वास एक चिकित्सा गलती है।

7. 82 : 31-5

शक्ति के अधिक से अधिक विकास के लिए पाप और कामुकता की दुनिया में, यह बुद्धिमानी से विचार करना है कि क्या यह मानव मन है या दिव्य मन है जो एक को प्रभावित कर रहा है। यहोवा के नबियों ने जो किया, बाल के उपासक करने में असफल रहे; लेकिन धोखे और भ्रम ने दावा किया कि वे ज्ञान के कार्य के बराबर हो सकते हैं।

8. 263 : 7-19

जब नश्वर मनुष्य आध्यात्मिक के साथ अपने अस्तित्व के विचारों को मिश्रित करता है और केवल भगवान के रूप में काम करता है, तो वह अब अंधेरे में और पृथ्वी से चिपके नहीं रहेगा क्योंकि उसने स्वर्ग का स्वाद नहीं लिया है। कार्मिक मान्यताएँ हमें धोखा देती हैं। वे मनुष्य को एक अनैच्छिक पाखंडी बनाते हैं, - जब वह अच्छा पैदा करेगा, तो वह बुराई पैदा करेगा, जब वह अनुग्रह और सुंदरता को रेखांकित करेगा, तो वह उन लोगों को घायल कर देगा, जिन्हें वह आशीर्वाद देगा। वह एक सामान्य गलत रचनाकार बन जाता है, जो मानता है कि वह एक अर्ध-देवता है। उनका "स्पर्श धूल की उम्मीद बन जाता है, जो धूल हम सब फेंक चुके हैं।" वह बाइबल की भाषा में कह सकता है: "जिस अच्छे काम की मैं इच्छा करता हूं, वह तो नहीं करता, परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता वही किया करता हूं।"

9. 403 : 14-20

आप स्थिति को आज्ञा देते हैं यदि आप समझते हैं कि नश्वर अस्तित्व आत्म-धोखे की स्थिति है न कि सत्य होने की। नश्वर मन लगातार नश्वर शरीर पर गलत विचारों के परिणाम उत्पन्न कर रहा है; और यह तब तक करना जारी रखेगा, जब तक कि नश्वर त्रुटि सत्य द्वारा अपनी काल्पनिक शक्तियों से वंचित न हो, जो नश्वर भ्रम के गॉसमेर वेब को मिटा देता है।

10. 252 : 7-14

जब झूठे मानव विश्वासों को अपने स्वयं के मिथ्यात्व से थोड़ा भी सीखते हैं, तो वे गायब होने लगते हैं। त्रुटि और उसके संचालन का ज्ञान पूर्व में होना चाहिए कि सत्य की समझ, जो त्रुटि को नष्ट कर देती है, जब तक कि पूरी नश्वर, भौतिक त्रुटि समाप्त नहीं हो जाती है, और शाश्वत सत्यता, मानव द्वारा और आत्मा के द्वारा बनाई गई, समझ और उसकी वास्तविक समानता के रूप में पहचानी जाती है निर्माता।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6